।। श्री साईंनाथ।।

पूर्णिमा व अमावश्या के अनुष्ठान की विधि

श्री साई शके 40–41

1. अनुष्ठान (पूजा) की जगह गोमूत्र से पोंछें या पानी में हल्दी और कुमकुम डालकर साफ करें।
2. उस जमीन पर हल्दी कुमकुम से स्वास्तिक बनाऐं और उस पर लकड़ी का पाटा रखें। पाटे के चारो ओर रंगोली बनाऐं।
3. पाटे पर हल्दी कुमकुम से स्वास्तिक बनाऐं।
4. एक तामन पर हल्दी कुमकुम से पृथ्वी तत्व बनाऐं।
5. पाटे पर बने स्वास्तिक पर इस तामन को रखें।
6. आपको दी हुई प्रतिमा या प्रतिमाऐं और नारायणी (तांबे की) प्रतिमा को पानी से स्नान कराकर अष्टागंध हल्दी कुमकुम लगाऐं। तामन के ऊपर बने पृथ्वी तत्व पर इनकों नीचे लिखे क्रमानुसार बिठाऐं।

श्री साई शके	श्री कारण	श्री महाकारण	श्री नारायणी
88	ॐ	श्री	✡

7. जिनके पास बाबा का आसन और तांबें का ताक है वह भी पंचामृत और पानी से प्रतिमाओं के साथ स्नान कराकर रखें।
8. एक विड़ा (रू 11, दो पान के पत्ते व एक साबुत सुपारी के साथ) सीधे हाथ की तरफ रखें। बाद में उंदबत्ती, देशी घी की ज्योत दिखाकर, दूध चीनी मिलाकर नैवेद्य करें।
9. इसके बाद आरती करें – आरती साईबाबा, आरती अवधूता, इत्यादि। फिर मंगलाचरण (सः जयति सिन्दूर बदनो) श्री शक्तिपीठ प्रार्थना व दैनंदिन प्रार्थना के बाद 21 बार.महामंत्र (सर्वमंगलमांगल्ये) करें।
10. शाम को अगरबत्ती देशी घी की ज्योत, दूध चीनी का नैवेद्य करने के बाद मैं इच्छानुसार कोई एक दो या तीन आरतियाँ कीजिए। दैनंदिन प्रार्थना कीजिए।
11. रोज सुबह को पुराने फूल उतार कर नए फूल पर अष्टगंध हल्दी कुमकुम लगाकर रखिए और ऊपर बताई गई पूजा करिये।